पश्चिम की तीर्थयात्रा

ऊ छङ्अन

विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह, पेइचिङ

पश्चिम की तीर्थयात्रा

ऊ छङअन

खण्ड दो

विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह, पेइचिङ

प्रथम संस्करण 2009

अनुवादक : मनमोहन ठाकौर
जानकी बल्लभ

हिन्दी सम्पादक : ली चुङई, ली लुङछाङ
छन शिय्वे, ल्यू मिङचन
छ्वेन युङमिङ, चाङ चुङछ्युन

ISBN 978-7-119-04786-7
© विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह, पेइचिङ, चीन, 2009

प्रकाशक : विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह
24 पाएवानच्वाङ मार्ग, पेइचिङ 100037, चीन
http://www.flp.com.cn

चीन लोक गणराज्य में मुद्रित

विषय-सूची

अध्याय-32
समतल पर्वत पर देता संदेश एक
कर्त्तव्यरत देवता आकर मनीषी को,
शूकर पड़ जाता है दारुण विपत्ति में
कमलपुष्प गुहा मध्य। 1

अध्याय-33
भ्रमित कर देता पाखण्ड सत्य प्रकृति जब
आद्य देव हो जाता सहायक मूल हृदय का। 19

अध्याय-34
उद्वेलित हो जाता मस्तिष्क-वानर जब
दानवों के शासक की दुष्ट चालाकी से,
हस्तगत कर लेता मनीषी महान तब
सारी ही निधियां तात्कालिक उपायों से। 36

अध्याय-35
करता पाखण्ड दमित प्राकृतिक स्वभाव सत्य,
मस्तिष्क-वानर प्राप्त कर लेता निधियां
पराजित कर दानवों को। 53

अध्याय-36
मस्तिष्क-वानर जब तनकर खड़ा होता
हार मान लेतीं सभी दुष्ट अभिधारणा,
पार्श्व में लगा द्वार तोड़ दिया जाता जब
दृष्टिगत हो जाता प्रखर प्रकाशित चंद्र। 70

अध्याय-37
भेंट करता रात्रि में शाही-प्रेत भिक्षु से,
आकर्षित कर लेता बालक को ऊखुङ-रूपान्तरण। 88

अध्याय-38
प्रश्न कर मां से सीख लेता पुत्र सत्य-मिथ्या भेद,
मिलते जब धातु, काष्ठ होकर रहस्यावृत्त
हो जाते स्पष्ट सत्य और मिथ्या दोनों ही। 106

अध्याय-39

रक्तपारद गुटिका लाल ले आया स्वर्ग जा,
तीन वर्ष बाद राजा जीवित पुनः हो उठा। 122

अध्याय-40

बालक चपल जब खेलता रूपांतरणों का खेल
ध्यान-हृदय उससे अशान्त हो जाता है,
वानर और अश्व लौट आते साथ चाकू ले
काष्ठ की माता भी रिक्त रह जाती है। 140

अध्याय-41

मस्तिष्क-वानर पराजित अग्नि द्वारा हुआ,
काष्ठ-माता को बंदी बना लिया दानव ने। 157

अध्याय-42

भक्तिभरा मनीषी चल पड़ा दक्षिण सागर ओर,
बालक लाल को क्वानइन ने करुणा कर बांधी डोर। 176

अध्याय-43

कृष्ण नद पर उड़ा लेता एक दानव भिक्षु को,
पश्चिमी युवराज ड्रैगन पकड़ लेता मकर को। 192

अध्याय-44

होता समागम शकट, आद्यगति धर्म-देह मध्य;
पाप, हृदयकेन्द्र-स्थित, रीढ़ पार जाता चला। 210

अध्याय-45

कक्ष में तीन पुनीतों के
नाम अपना छोड़ जाता है मनीषी,
शक्ति निज करता प्रदर्शित
स्वयं वानरराज कज्जल शकट साम्राज्य में। 227

अध्याय-46

मिथ्या विश्वास दमित करता सच्चे धर्म को,
मस्तिष्क-वानर विनष्ट कर देता पाप को। 244

अध्याय-47

स्वर्ग-सरिता रोक देती भिक्षु का पथ रात्रि में,
धातु एवं काष्ठ करते दयावश उद्धार शिशु का। 261

अध्याय-48

दानवी झंझा घूर्णिमान कर देती हिम,
बुद्ध-पूजक भिक्षु चलता बर्फ पर। 278

此为试读，需要完整PDF请访问：www.ertongbook.com

अध्याय-49
बड़े दुर्भाग्यवश जा गिरता नदी में सानचाङ,
क्वानइन की मछली-टोकरी बचा लेती उसको। 295
अध्याय-50
कामना उत्तेजित कर देती जब भावना को
अनियंत्रित हो जाता स्वभाव,
आत्मा पर यदि संशय छा जाए
व्याकुल हो जाता हृदय, दानव आ टकराते। 312.
अध्याय-51
हुए व्यर्थ मस्तिष्क-वानर के छल सहस्रों,
अग्नि और जल मिल दैत्य का न बिगाड़ कर पाए तनिक भी। 327
अध्याय-52
वानर विध्वस्त कर देता चिनतओ गुहा,
मुद्रिका-स्वामी का देते संकेत बुद्ध। 344
अध्याय-53
भोजन समाप्त कर ध्यानगुरु करता गर्भ धारण,
लाती जल पीत-पत्नी भ्रूण की समाप्ति हेतु। 361
अध्याय-54
पश्चिम की यात्रा में बुद्ध-स्वभाव पहुंचता महिला देश,
पलायन नियोजित करता मस्तिष्क-वानर सुंदरियों से। 379
अध्याय-55
यौन लम्पटता ने लुब्ध किया थाङ भिक्षु को,
साधु था स्वभाव उसका, अतः अक्षत रह गया। 396
अध्याय-56
आत्मा अनियंत्रित हो, करती विनष्ट दस्यु,
दिग्भ्रमित होकर मार्ग त्यागता मस्तिष्क-वानर। 413
अध्याय-57
पोतारक जाकर उपालम्भ देता वास्तविक सुन ऊखुङ,
वानरराज कृत्रिम करता नकल प्रलेख की जल-पट गुहा में। 430
अध्याय-58
मिलकर मस्तिष्क दो, मचा देते कोलाहल धरा और स्वर्ग में,
एक ही देह को हो न पाता प्राप्त निर्वाण कभी। 445
अध्याय-59
अग्नि पर्वतों पर होता अवरुद्ध सानचाङ मार्ग,

वानर करता पहले कदली व्यजन लाने का प्रयास। 460

अध्याय-60

त्याग कर युद्ध वृषभ दानवराज जाता भोज में,
पुनः चेष्टा करता वानर पा लेने की कदली व्यजन। 477

अध्याय-61

दानवराज-दमन हेतु देता सहायता
मंदबुद्धि चू पाच्ये यथाशक्ति अपनी,
व्यजन लेने उधार
वानर करता तीसरा प्रयास। 495

अध्याय-62

पोंछता देवालय वह धुले निर्मल हृदय के साथ,
दानव दीक्षित हुए बन्दी बन, और देह हुई संवर्धित। 514

अध्याय-63

ड्रैगन प्रासाद में दानवों को करते समाप्त भिक्षु दो,
नष्ट कर पाप पुनः प्राप्त कर लेते निधि। 530

अध्याय-64

ऊनङ जुटा घोर श्रम में था कंटक पर्वत के अंचल,
लीन काव्य-चर्चा में सानचाङ हुआ अमर्त्यों के आश्रम। 547

अध्याय-65

रच डाला दानव ने कृत्रिम वज्र संघाराम,
फंसे तीर्थयात्री घोर संकट में चारों। 567

अध्याय-66

देवगणों का हुआ सामना कुटिल शत्रु से भारी,
बना लिया मैत्रेय बुद्ध ने दुष्ट दैत्य को बन्दी। 584

अध्याय-32

समतल पर्वत पर देता संदेश एक
कर्त्तव्यरत देवता आकर मनीषी को,
शूकर पड़ जाता है दारुण विपत्ति में
कमलपुष्प गुहा मध्य ।

अब कथा आगे यह बताती है कि थाङ भिक्षु के साथ वानर का पुनर्मिलन होने के पश्चात् वे चारों अपने समान संकल्प की पूर्ति हेतु किस प्रकार पश्चिम दिशा में अपनी यात्रा जारी रखते हैं । हस्ती राजा अपनी राजधानी से बाहर तक उनको विदा देने उनके साथ गया और उसकी पुत्री को वापस लौटा ले आने के लिए उसने उन चारों को अनेक धन्यवाद प्रदान किए । तत्पश्चात् वे यात्रा पर निकल पड़े । भूख लगने पर वे खा लेते, प्यास लगने पर पानी पी लेते, दिन भर चलते और रात्रि में कहीं विश्राम कर लेते । अब तक वसन्त ऋतु आ पहुंची थी ।

स्पंदित कर देती मंद पवन
रेशमी हरित विलो मंजरियां,
प्रेरणा दे देती वसन्त की मादक ऋतु
पक्षियों को अपना कलरव करने की ।
खिल उठते पुष्प वृंद
उष्ण सूर्यालोक में
धरा महक-महक जाती
जिनकी सुगंधि से ।
आंगन मध्य आ जाता
अबाबीलों का जोड़ा एक,
समय आ पहुंचा था
वसन्त का मस्ती भरा ।
लाल धूल छाई थी
सड़कों और धरती पर,
गूंजती बांसुरियां और शहनाइयां,
झीने रेशमी वस्त्र
पहन लिए लोगों ने,

फूलों में होड़ मची
मदिरा चषक बंटने लगे।

गुरु और शिष्य यात्रा का आनंद लेते चले जा रहे थे। तभी सहसा उन्होंने एक पर्वत को अपना मार्ग अवरुद्ध किए खड़ा देखा। थाङ भिक्षु ने चेतावनी दी :

"शिष्यो, अत्यन्त सावधान रहना। मुझे चिन्ता हो रही है कि कहीं व्याघ्र और भेड़िये हमारे लिए इस ऊंचे पर्वत को पार करने में बाधक सिद्ध न हों।"

वानर बोला, "धर्मपरायण व्यक्ति होने के नाते आपका ऐसा कहना उचित नहीं है। क्या आप भूल गए कि काकनीड़ सन्यासी ने आपको जो 'हृदय सूत्र' सिखाया था उसमें कहा गया है कि 'प्रज्ञा पारमिता पर निर्भर रहने वाले का चित्त मुक्त रहता है, उसे भय नहीं होता, वह अवास्तविकता के स्वप्निल विचारों से मुक्त हो जाता है तथा परम निर्वाण का सुख भोगता है।' आपको तो केवल इतना ही करना है कि

'पोंछ दें धूल वह जमी है जो विचारों पर
कानों से रजकण सब धो कर निकाल दें,
बिना कभी झेले अति भीषण कष्टों को
अति महान मानव तुम कभी बन सकोगे नहीं।'

आपको इतना खिन्नमन होने की कोई आवश्यकता नहीं है। मेरे रहते आकाश टूट गिरने पर भी आपका बाल भी बांका नहीं हो सकता। फिर आप भेड़ियों और व्याघ्रों से क्यों भयभीत हो रहे हैं ?" थाङ भिक्षु ने घोड़े की लगाम खींची और उत्तर दिया :

"पाकर सम्राट की आज्ञा जब
छोड़ा छाङआन मैंने,
निश्चय था मेरा दृढ़
पश्चिम के बुद्ध की पूजा का
उस पवित्र भूमि पर
जहां स्वर्ण सिंहासन उनका चमकता और
जहां चैत्य में उनके जेड केश दमकते।
खोजूंगा नाम रहित विश्व की नदियों को
पार कर जाऊंगा अनामी पर्वत शृंखला
इच्छा मेरी प्रबल कुहासावृत्त लहरों के
पार उतर जाने की ऊंची तरंगों के।
अरे, विश्राम किन्तु पाऊंगा, बोलो तो
कब और कहां, यह तो बताओ मुझे।"

यह सुनकर मन ही मन हंसते हुए वानर कहने लगा, "इसमें आपको कोई कठिनाई

नहीं होगी। लक्ष्यसिद्धि के पश्चात् आपके समस्त नियत कर्मों की समाप्ति हो जाएगी और आपके समस्त धर्म शून्य हो जाएंगे। तब आप अवश्य ही विश्राम कर सकेंगे।"

वानर के इस कथन से थाङ भिक्षु का हृदय आनंद से परिपूरित हो गया और उसने अपने ड्रैगन अश्व की रास ढीली कर दी तथा उसे मार्ग पर आगे बढ़ा दिया। पर्वत पर चढ़ते समय उन्होंने लक्ष्य किया कि वह विषम उत्प्रपातों तथा शिलाखंडों से भरा हुआ था।

ऊंचे शृंग थे उसके
शुण्डाकार शिखर थे।
नीचे बह रही थी एक सर्पिल सरिता
एकाकी खड़े उत्प्रपात के निकट ही।
बहुत ही नीचे बहती सर्पिल सरिता के मध्य
आप सुन पाते थे सांपों को खेलते, पानी उछालते,
एकाकी खड़े उत्प्रपात के निकट ही।
ढाल पर उगे हुए वृक्षों के बीच में
व्याघ्र दुम हिलाते थे।
ऊपर को देखो यदि
नीला आकाश दिख जाता चोटियों के परे,
और मुड़ जाने से
गहरे कहीं घाटी में
नभ आकर मिल जाता।
ऊपर चढ़ते जाना
मानो सीढ़ियां चढ़ना
और उतरना नीचे,
गहरे किसी गर्त में जा गिरना।
सचमुच यह था रहस्यमढ़ा, विषम कूटक एक
श्रेणीबद्ध शिलाओं की लम्बी दीवार सा।
विषम अति ढालों पर
औषधि चुनने वाले और लकड़हारे
कदम बढ़ा पाते नहीं,
जंगली बकरियां, घोड़े मुक्त दौड़ते फिरते,
शशकों और पर्वतीय बैलों की गिनती नहीं।
पर्वत इतना ऊंचा,
ढक देता सूर्य, नक्षत्रों को,
बहुधा दुरात्मा और धूसर वृक मिल जाते।

दुर्गम था पथ जिस पर
अश्व का चलना कठिन,
दर्शन मिलेगा कैसे
वज्र संघाराम पहुंचकर बुद्ध का ?

इस पर्वत को देखने के लिए जैसे ही सानचाङ ने अपने अश्व की लगाम कसी, उसने पाया कि वे लोग एक अत्यन्त कठिन स्थल पर आ पहुंचे थे। वहां हरे, घास भरे ढाल पर एक लकड़हारा खड़ा था। वह ऐसा दिखाई दे रहा था :

शीश पर पहने था मुड़ा-तुड़ा नीला टोप
देह पर झूलती काली ऊनी बंडी।
मुड़ा-तुड़ा ऊनी टोप
धूप और वर्षा से रक्षा तो कर देता
पर विचित्र दिखता था।
पहने बंडी काली ऊनी वह था प्रसन्न और
चिन्ता रहित, इसे देख
ताज्जुब बहुत होता था।
हाथ की फौलादी कुल्हाड़ी को
पत्थर पर घिस-घिसकर
चमकाया था उसने,
काट कर शुष्क काष्ठ
गुठरियां बनाता था।
कंधे की बहंगी से
झूला करता वसन्त,
चारों ही ऋतुओं में
मस्त बना रहता था।
देह थी उसकी
तनावों से रहित सभी
मानस था चिन्तामुक्त
और अति स्पष्ट था।
आजीवन उसने थी स्वीकारी नियति निज
पर्वत पर रहते हुए
चिन्ता नहीं व्यापी कभी
यश की, अपयश की उसको।

वह लकड़हारा

此为试读，需要完整PDF请访问：www.ertongbook.com

काट रहा था सूखी लकिड़यां ढाल पर
देखा उसने सानचाङ को आते हुए पूर्व से।
रख दी कुल्हाड़ी और निकल आया वृक्षों से
तेजी से जा चढ़ा शिलाखण्डों के ऊपर।

वह चिल्लाया, "अपनी पश्चिम की यात्रा में क्षणभर के लिए यहीं रुक जाओ। मैं आप लोगों को सावधान कर देना चाहता हूं कि इस पर्वत पर हिंस्र पिशाचों और भयानक भेड़ियों का एक झुंड रहता है। वे पश्चिम की ओर जाने वाले पूर्व के यात्रियों को खा डालते हैं।"

यह सुनकर सानचाङ तो हक्का-बक्का हो गया। काठी में बैठे-बैठे ही वह थरथर कांपते हुए पीछे मुड़कर शिष्यों से कहने लगा, "सुना तुमने, यह लकड़हारा क्या कह रहा है? इस पर्वत पर पिशाचों और भेड़ियों का वास है। क्या तुममें से किसी में इससे उनकी विस्तृत जानकारी प्राप्त करने का साहस है?" वानर बोला, "गुरुदेव, आप चिन्तित न हों। मैं जाकर पूछे लेता हूं।"

वानर भाई तेजी से पर्वत पर जा चढ़ा और लकड़हारे को "अग्रज" कहकर उससे उन भेड़ियों और पिशाचों के संबंध में पूछताछ करने लगा। उसको प्रति-नमस्कार कर, लकड़-हारे ने प्रश्न किया, "आदरणीय भन्ते, आप लोग यहां किसलिए आए हैं?" वानर ने उसे बताया, "अग्रज मेरे, आपको सच बताऊं, हम लोग पूर्व से आ रहे हैं और धर्मग्रंथ लेने पश्चिम जा रहे हैं। उस घोड़े पर मेरे गुरुदेव विराजमान हैं। वे तनिक डरपोक हैं। इसलिए, जब आपने उन्हें पिशाचों तथा भेड़ियों के बारे में सूचित किया तो उन्होंने उनकी विस्तृत जानकारी लेने के लिए मुझे आपके पास भेजा है। वे पिशाच और भेड़िये यहां कब से रहते हैं? वे अपने काम में निष्णात हैं अथवा नौसिखिये हैं? कृपया आप मुझे उनके विषय में सब कुछ बता दें ताकि मैं इस पर्वत के तथा अन्य स्थानीय देवताओं के द्वारा उनको यहां से भगा दिए जाने की व्यवस्था करवा दूं।" यह सुनकर लकड़हारा हंसते-हंसते दुहरा होने लग गया। उसने कहा, "तुम तो सचमुच कोई पागल भिक्षु जान पड़ते हो।" वानर ने कहा, "मैं पागल नहीं हूं। मैं बिलकुल ठीक कह रहा हूं।" लकड़हारा बोला, "यदि तुम अनर्गल प्रलाप नहीं कर रहे तो तुमने यह क्यों कहा कि तुम उनको यहां से भगा देने की व्यवस्था कर दोगे?" वानर ने उत्तर दिया, "मुझे तो तुम उन पिशाचों और भेड़ियों के कोई निकट संबंधी जान पड़ते हो जो इतने आडम्बरपूर्वक व्यर्थ की बातें करते हुए हमारा रास्ता रोककर खड़े हो। यदि उनके निकट संबंधी न भी हो तो भी तुम उनके पड़ोसी अथवा मित्र तो अवश्य ही होगे।" फिर से हंसते हुए लकड़हारा कहने लगा, "पागल भिक्षु, तुम सीमा का अतिक्रमण कर रहे हो। मैं तो अच्छे उद्देश्य से ही तुम्हें विशेष रूप से चेतावनी देने यहां आया हूं। मैं तो तुम्हें अपनी यात्रा में हर क्षण सावधान रहने को कह रहा हूं और तुम मुझ पर ही उन सब पिशाचों का उत्तरदायित्व थोपे दे रहे हो। तुम इस बात की चिन्ता मत

करो कि मुझे इन दानवों की क्षमता की जानकारी कैसे हो गई है। यदि मुझे पता हो तब भी तुम उनको यहां से भगा देने में कैसे समर्थ हो सकते हो ? उन्हें यहां से हटाकर कहां भिजवा दोगे ?" वानर ने उत्तर दिया, "यदि वे आकाश के दैत्य होंगे तो मैं उनको जेड सम्राट के पास भिजवा दूंगा, और यदि वे धरा के दैत्य हुए तो मैं उनको धरा-प्रासाद में भेज दूंगा। पश्चिमी दैत्यों को बुद्ध के निकट और पूर्वी दानवों को मनीषी के पास जाना पड़ आएगा। उत्तर के दैत्यों को उत्तर के सत्य सैनिक सम्राट और दक्षिणी दानवों को अग्निदेव के पास भिजवाऊंगा। ड्रैगन-आत्माओं को सागर देव और दानवों को यमराज के पास भेज दूंगा। उन सब के जाने के लिए एक-न-एक दिन नियत है और मैं उन समस्त स्थानों के अधिकारियों से भली भांति परिचित हूं। मुझे तो केवल आदेश लिखना पड़ेगा और वे सभी उसी रात्रि को वहां झटपट भिजवा दिए जाएंगे।"

लकड़हारा व्यंग्यात्मक हंसी हंसते हुए कहने लगा, "पागल भिक्षु, भले ही तू मेघों के मध्य यात्रा कर लिया करता हो और भले ही तूने कुछ जादू भी सीख लिए हों और चाहे तू कुछ दुष्ट आत्माओं को भगाने तथा दानवों को पकड़ने में सफल भी हो जाता हो, तथापि यह तू भली भांति समझ ले कि तेरा पाला इतने अधिक अधम तथा दुष्ट प्रकृति के राक्षसों से पहले कभी नहीं पड़ा होगा।" वानर ने पूछा, "उनमें ऐसी कौन सी दुष्टता भरी हुई है ?" लकड़हारे ने उत्तर दिया, "यह पर्वत आरपार प्रायः दो सौ कोस फैला हुआ है। इसे समतल शीर्ष पर्वत कहा जाता है। इसमें कमल पुष्प नामक एक गुहा है जिसमें दो दानव सरदार रहते हैं। वे भिक्षुओं को पकड़ने के लिए इतने दृढ़ प्रतिज्ञ हैं कि उन्होंने जिस भिक्षु को अपना ग्रास बनाने का निश्चय कर रखा है उसका चित्र बनाकर अपने पास रख लिया है। उस भिक्षु का नाम भी उन्होंने मालूम कर लिया है। जानता है, उस भिक्षु को थाङ भिक्षु कहा जाता है। अब, यदि तुम लोग थाङ के अतिरिक्त अन्य किसी क्षेत्र से आए हुए हो तब तो वे तुम्हें कोई क्षति नहीं पहुंचाएंगे। किन्तु यदि तुम्हारा आगमन वहीं से हुआ है, तो तुम कदापि आगे मत बढ़ो।" वानर कहने लगा, "हम तो सचमुच थाङ देश के ही भिक्षु हैं।" लकड़हारा बोला, "तब तो वे तुम्हें अवश्य ही खा डालेंगे।" वानर ने पूछा, "हम तो वास्तव में सौभाग्यशाली हैं, अत्यधिक सौभाग्यशाली हैं। केवल, हमें यह ज्ञात नहीं है कि वे हमें किस भांति खाएंगे।" लकड़हारे ने प्रश्न किया, "तुम किस प्रकार खाया जाना पसंद करोगे ?" वानर ने उत्तर दिया, "अच्छा हो यदि वे पहले मेरा सिर खाएं। हां, यदि उन्होंने पहले मेरे पांव खाना आरम्भ कर दिया तो मुझे अवश्य बड़ी पीड़ा होगी।" लकड़हारे ने पूछा, "वे पहले तुम्हारा सिर खाएं या पैर, इससे तुम्हें क्या अन्तर पड़ेगा ?" वानर बोला, "तुम्हें तो इसका कोई पूर्व अनुभव है नहीं। यदि उन्होंने पहले मेरा सिर खाना आरम्भ किया तो वे एक ही ग्रास में उसे काट लेंगे और मेरी तुरन्त ही मृत्यु हो जाएगी। उसके बाद भले ही वे मुझे तलें, चर्बी में भूनें या पानी में उबालें, मुझे तनिक सी भी पीड़ा नहीं होगी। किन्तु यदि उन्होंने मुझे पांवों की ओर से खाना आरम्भ कर दिया तो वे पहले तो मेरे टखने चबाएंगे, फिर मेरे पांव चबाएंगे और चबाते-चबाते वे मेरी कमर तक आ पहुंचेंगे, इस बीच

मैं तो जीवित ही बना रहूंगा और मुझे असह्य यंत्रणा होती रहेगी। यह तो किश्तों में पीड़ा भोगना हो जाएगा। इसीलिए मुझे निरन्तर कष्ट होता रहेगा।" लकड़हारा बोला, "भिक्षु, तुम्हें मनुष्य को खाने का लम्बे समय से अनुभव है। जैसे ही वे तुम्हें पकड़ने में सफल हो जाएंगे, वे तुम्हें रस्सियों से कसकर बांध देंगे और फिर तुम्हें एक वाष्प-पात्र में रखकर समूचा ही निगल जाएंगे।" व्यंग्य भरी हंसी हंसते हुए वानर कहने लगा, "यह तो और भी अच्छा रहेगा। इसमें तो कोई यंत्रणा होगी ही नहीं। पहले कुछ गर्मी लगेगी और बस, फिर सब समाप्त हो जाएगा।" लकड़हारे ने कहा, "भिक्षु, यह कदापि परिहास का विषय नहीं है। उन दैत्यों के पास पंच निधियां हैं जिन्हें वे सदैव अपने साथ लिए रहते हैं और उनकी जादुई शक्तियां असीमित हैं। भले ही तुम स्वर्ग के जेड स्तम्भ ही क्यों न हो अथवा सागरों को सन्तुलित बनाए रखने वाले शहतीर हो, तब भी थाङ भिक्षु को यहां से निरापद रूप से निकाल ले जाने से पहले तुम्हारा पेशाब निकल जाएगा।" वानर ने पूछा, "कितनी बार ?" लकड़हारे ने उत्तर दिया, "तीन-चार बार।" वानर बोला, "यह तो कोई विशेष बात नहीं होगी। हम सभी वर्ष में सात-आठ सौ बार मूत्र-त्याग करते ही रहते हैं। तीन-चार बार अधिक कर देंगे तो उसमें हमें कोई कठिनाई नहीं होगी। उसके बाद तो हम यहां से सकुशल बाहर निकल ही जाएंगे।"

निर्भय महान मनीषी का एक मात्र विचार सदैव ही थाङ भिक्षु की रक्षा करना ही रहता था। वह लकड़हारे को वहीं छोड़कर जल्दी ही वापस लौट आया। पर्वत के किनारे खड़े घोड़े के पास पहुंचकर उसने कहा, "गुरुदेव, कोई विशेष बात नहीं है। यह सत्य है कि इस पर्वत पर कुछ दुष्ट आत्माओं का निवास है, किन्तु यहां रहने वाले लोग कायर होने के कारण उनसे भयभीत बने रहते हैं। आपके निकट मेरे रहते, आपको उनसे डरने की कदापि कोई आवश्यकता नहीं है। अतएव, चलिए, हम आगे बढ़ें।"

यह सुनकर सानचाङ आश्वस्त हो गया और उसका घोड़ा वानर के पीछे-पीछे चलने लग गया। चलते-चलते उन्होंने लक्ष्य किया कि वह लकड़हारा कुछ समय पहले ही कहीं अन्तर्धान हो गया था। सानचाङ ने प्रश्न किया, "हमें संदेश देने वाला लकड़हारा कहीं दिखाई क्यों नहीं दे रहा ?" शूकर ने कहा, "हमारा भाग्य भी कितना खोटा है। हमें दिन में ही भूत से भेंट करनी पड़ गई है।" वानर बोला, "अवश्य ही वह और अधिक जलावन की खोज में जंगल के भीतर चला गया होगा। मैं देख लेता हूं।" उसने अपने अग्निवर्णी नेत्रों को चौड़ा कर स्वर्णिम कनीनिका से देखना आरम्भ किया। उस भव्य महान मनीषी ने सारा जंगल खोज डाला किन्तु उसे उस लकड़हारे का कोई चिन्ह भी कहीं दिखाई न दिया। फिर उसने मेघों की ओर अपनी दृष्टि गड़ाई। वहां पर उसको उस दिन का कर्त्तव्यरत देवता दीख गया। वह उछलकर उसके निकट जा पहुंचा और उसे बार-बार "लोमश दानव" आदि अपशब्द कहने के बाद उसने प्रश्न किया, "तुमने अपना रूपांतरण कर वह नाटक करने के बजाए मुझसे सीधे-सीधे क्यों नहीं कह दिया।" चिन्तित हुए कर्त्तव्यरत देवता ने महान मनीषी को झुककर प्रणाम किया और कहा, "चेतावनी देने में हुए इतने विलम्ब के लिए

मुझे क्षमा कर दीजिए। इन पिशाचों की जादुई शक्तियां सचमुच बहुत प्रचण्ड हैं। वे अनेकानेक रूपान्तरण करने में सक्षम हैं। उनसे अपने गुरुदेव की रक्षा करने में आपको अपनी सम्पूर्ण दक्षता तथा चतुराई का प्रयोग करना पड़ जाएगा। यदि आप तनिक से भी असावधान हुए तो आपके लिए पश्चिमी स्वर्ग पहुंच पाना असम्भव हो जाएगा।"

वानर ने कर्त्तव्यरत देवता को विदा कर दिया। अपना मेघ नीचे उतारकर पर्वत पर चलते समय वह व्यग्र और चिन्तित हो रहा था। उसने सानचाङ, शूकर तथा भिक्षु रेतात्मा को आगे बढ़ते देखा। उसने विचार किया, "यदि मैंने गुरुदेव से सारी बात स्पष्ट कह दी तो वे उसे सह नहीं पाएंगे और रोने लग जाएंगे। किन्तु यदि उनसे न कहा, उन्हें अंधकार में रखा, तो उनको वस्तुस्थिति का पता ही नहीं चलेगा। फिर यदि दानवों ने उन्हें पकड़ लिया तो मेरे लिए बड़ा झंझट खड़ा हो जाएगा। यही अच्छा रहेगा कि मैं पहले शूकर से मिल लूं। मैं उसको उन दैत्यों से युद्ध करने के लिए आगे भिजवा देता हूं। यदि वह जीत गया तो यह उसके गौरव की वृद्धि करने वाली बात होगी। किन्तु यदि वह असफल रहा और दानवों ने उसे बंदी बना लिया तो मैं जाकर उसे छुड़ा लूंगा। इस प्रकार मुझे अपनी शक्ति प्रदर्शित करने तथा प्रसिद्धि प्राप्त करने का अवसर मिल जाएगा।" यह सब सोचते हुए उसे यह चिन्ता भी हो रही थी कि कहीं शूकर इस झमेले में पड़ने से इनकार ही न कर दे और उल्टे वह स्वयं ही सानचाङ द्वारा रक्षित होने का प्रयास न करने लग जाए। वानर ने निश्चय कर लिया कि वह शूकर को युद्ध करने के लिए बाध्य कर देगा।

अब महान मनीषी ने एक छल किया। उसने अपनी आंखें मलकर उनसे पानी निकाल लिया और फिर वह गुरुदेव के पास जा पहुंचा। उसे आता देखकर शूकर भिक्षु रेतात्मा से कहने लगा, "अपनी बहंगी नीचे रख दो और गठरी खोलकर सारा सामान बाहर निकाल लो। हम दोनों उसे बांट लेंगे।" भिक्षु रेतात्मा ने पूछा, "बांट लेंगे से तुम्हारा क्या आशय है ?" शूकर बोला, "उसे हम परस्पर वितरित कर लेंगे। फिर तुम प्रवहमान सिकता नद में लौटकर पुनः दानव बन जाना और मैं अपनी पत्नी से भेंट करने काओ ग्राम चला जाऊंगा। हम इस सफेद घोड़े को बेचकर उस धन से गुरुदेव को बूढ़े हो जाने के बाद जिस कफन की आवश्यकता पड़ेगी वह खरीद देंगे। फिर, पश्चिमी स्वर्ग जाने के बजाए अपने-अपने रास्ते लग जाएंगे।" यह सुनकर सानचाङ ने कहा, "यात्रा के बीच में ही तुम ऐसी मूर्खता भरी बातें क्यों करने लग गए हो ?" शूकर बोला, "मूर्खतापूर्ण बातें कौन कर रहा है ? मैंने जो कुछ भी कहा है, मैं उसे पुनः कहने को प्रस्तुत हूं। क्या आप देख नहीं रहे हैं कि वानर नेत्रों से आंसू बहाता चला आ रहा है ? वह तो एक ऐसा सुदृढ़ प्राणी है जिसे न आकाश में जाते हुए भय होता है, न पाताल में। काट दिए जाने, जला दिए जाने अथवा तेल में उबाल दिए जाने से भी वह डरता नहीं है। अब जब वही इतना उदास होकर आंसू बहाता चला आ रहा है, तो यह निश्चय है कि इस उत्प्रपातों से लदे पर्वत पर ऐसे भयंकर पिशाचों और भेड़ियों का वास अवश्य ही होगा जिनसे हम सरीखे दुर्बल हृदय व्यक्ति कदापि बचकर यहां से निकल नहीं सकेंगे।" सानचाङ ने झिड़का, "मूर्खतापूर्ण बातें करना बंद करो। मैं ही

उससे पूछे लेता हूं।" फिर उसने वानर से कहा, "मुझे स्पष्ट बताओ, तुम इतने चिन्तित क्यों हो रहे हो? तुम रो क्यों रहे हो ? क्या इस प्रकार तुम हम सब को भयभीत कर देना चाहते हो ?" वानर ने उत्तर दिया, "जिस व्यक्ति ने अभी-अभी हमें संदेश दिया था वह आज का कर्त्तव्यरत देवता था। उसने मुझे बताया कि यहां रहने वाले दुष्ट पिशाच इतने भयंकर और उग्र हैं कि उनके पंजों से बच निकलना अत्यन्त दुष्कर होगा। उसने यह भी कहा है कि हम इन उत्तुंग पर्वतों के पार जाने में कदापि समर्थ नहीं हो सकेंगे। हमारा यहीं से कहीं अन्यत्र लौट जाना उचित रहेगा।" इस समाचार से सानचाङ भय से कांप उठा। वह वानर का व्याघ्रचर्म वाला लहंगा खींचते हुए कहने लगा, "आधी यात्रा समाप्त कर लेने के पश्चात् तुम अब वापस लौटने का विचार क्यों करने लग गए ?" वानर बोला, "मैं झिझक नहीं रहा, किन्तु हम इतनी अधिक दुष्ट आत्माओं से लोहा नहीं ले सकेंगे। 'भट्ठी में पड़े लोहे के टुकड़े से केवल कुछ कीलें ही तो बनाई जा सकती हैं।' " सानचाङ ने कहा, "तुम ठीक कह रहे हो। अकेले तुम्हारे लिए यह काम अत्यन्त कठिन सिद्ध होगा। क्लासिकी सैन्य ग्रंथ में भी कहा गया है, 'मुट्ठीभर लोग अधिसंख्यक लोगों का मुकाबला नहीं कर सकते।' किन्तु मेरे साथ शूकर और भिक्षु रेतात्मा भी तो हैं। इनका तुम अपने अधीनस्थ कर्मचारियों के रूप में उपयोग कर सकते हो। तुम तीनों मिलकर मार्ग प्रशस्त करने तथा मुझे पर्वत के पार ले जाने का प्रयास करो। बाद में तुम्हें उचित पुरस्कार दे दिया जाएगा।"

वानर भाई के नाटक ने सानचाङ के मुख से यह बात कहलवा ली। अतएव उसने अपने आंसू पोंछ डाले और कहा, "गुरुदेव, यदि शूकर मेरी बताई दो बातें कर दे तो आपकी इच्छानुसार आपको इस पर्वत के पार जाने की एक-तिहाई सम्भावना हो सकती है। किन्तु यदि उसने ये दोनों काम नहीं किए तो आपको कोई आशा नहीं रखनी चाहिए।" शूकर बोला, "भाई, यदि हम लोग पर्वत पार न कर सकें तो हमें यहीं से अलग हो जाना चाहिए। मुझे तो इस झमेले से दूर ही रखिए।" सानचाङ ने कहा, "शिष्य, पहले अपने भाई से पूछ तो लो कि वह तुमसे क्या काम करवाना चाहता है।" उस मंदबुद्धि ने पूछा, "भाई, आप मुझसे क्या कराना चाहते हैं ?" वानर ने उत्तर दिया, "तुम गुरुदेव की रक्षा करते रहो और पर्वत पर पहरा लगाते रहो।" शूकर बोला, "गुरुदेव की रक्षा करने पर तो मुझे उनके साथ ही ठहरा रहना पड़ेगा और पहरा लगाने में मुझे इधर-उधर घूमते रहना होगा। तुम मुझे एक ही समय में ठहरे रहने और घूमते रहने के लिए कैसे कह रहे हो ? मैं दोनों काम साथ-साथ कदापि नहीं कर सकता।" वानर ने कहा, "मैं तुमसे दोनों काम साथ-साथ करने को नहीं कह रहा। मैं तो इनमें से केवल एक काम करवाना चाहता हूं।" शूकर मुस्कराते हुए बोला, "वह कहीं अधिक आसान होगा, यद्यपि मैं अभी भी समझ नहीं सक रहा हूं कि गुरुदेव की रक्षा करने और पर्वत पर पहरा लगाने से आपका वास्तविक तात्पर्य क्या था। कृपया आप ही मुझे बता दें कि आपकी मुझसे क्या अपेक्षाएं रहेंगी। फिर मुझे जो भी कार्य योग्य लगेगा, वह मैं कर दूंगा।" वानर ने बताया, "गुरुदेव की रक्षा करने से मेरा अभिप्राय यह है कि यदि वे कहीं भी भ्रमण करने जाएं तो तुम उनकी सहायता करते रहोगे। यदि वे

भोजन करना चाहें तो तुम उनके लिए कहीं से भिक्षा मांग लाओगे। किन्तु यदि वे भूखे रह गए तो तुम्हें मार पड़ेगी। यदि उनका मुंह तनिक भी पीला पड़ा तो भी तुम्हें मार पड़ेगी और यदि वे तनिक से भी दुर्बल हो गए तो तुम्हें ही पीटा जाएगा।" शूकर भयभीत होकर कह उठा, "यह अत्यन्त कठिन कार्य है। उनकी देखभाल करते रहने में अथवा उन्हें कहीं टिकाए रखने में तो कठिनाई नहीं है। यहां तक कि उन्हें पीठ पर लादकर ले चलना भी बहुत आसान है। किन्तु यदि उन्होंने मुझे किसी गांव में भिक्षा मांगने भेज दिया तो हमारे मार्ग के इस पश्चिमी भाग वाले लोग समझ ही नहीं पाएंगे कि मैं धर्मग्रंथ लेने जाने वाला एक भिक्षु हूं। वे तो मुझे पर्वत से नीचे उतर आया कोई जंगली सूअर समझ बैठेंगे। फिर अपने हाथों में कांटे, पांचे और झाड़ू थामे लोगों की भीड़ मुझे घेरकर पकड़ लेगी और मुझे मारकर नए वर्ष का पर्व मनाने के लिए मेरे मांस पर नमक लगाकर उसे रख लेगी। इस प्रकार मेरा तो अंत ही हो जाएगा। ठीक है न?" वानर भाई बोला, "तो फिर तुम पर्वत पर पहरा ही दे लो।" शूकर ने प्रश्न किया, "उसमें मुझे क्या-क्या करना पड़ेगा।" वानर ने उत्तर दिया, "तुम्हें पर्वत में घुसकर यह पता लगाना पड़ेगा कि इस पर कितने दैत्य रहते हैं। साथ ही, पर्वत की सारी जानकारियां प्राप्त करनी पड़ेंगी। उन दैत्यों की गुहा कैसी है, यह पता लगाना पड़ेगा। तभी तो हम इसके पार जा सकेंगे।" शूकर बोला, "यह तो अत्यन्त सरल कार्य है। मैं पर्वत पर पहरा लगाऊंगा।" यह कहकर वह अपना लहंगा पहने पांचा उठाकर अकड़ के साथ पर्वत की गहराई में प्रविष्ट हुआ और बड़े जोश के साथ अपने रास्ते पर आगे बढ़ने लगा।

वानर अपनी निष्ठुर हंसी दबा नहीं पाया। सानचाङ ने उसे फटकार लगाई, "नीच वानर, तुझमें अपने भाइयों के प्रति लेशमात्र भी स्नेह नहीं है, केवल मात्र ईर्ष्या ही भरी हुई है। पहले तो तूने चालाकी भरे वचनों से उस से बलपूर्वक पर्वत पर पहरा देना स्वीकार करवा लिया और अब तू उस पर हंस रहा है!" वानर ने कहा, "मैं उस पर नहीं हंस रहा। मेरी हंसी सोद्देश्य है। आप देख लीजिएगा, वह न तो पर्वत पर पहरा ही लगाएगा और न ही किसी दैत्य के पास जाने का साहस कर सकेगा। वह थोड़ी देर कहीं जाकर छिपा बैठा रहेगा और फिर हमको भुलावा देने के लिए कोई कहानी गढ़ लेगा।" सानचाङ ने पूछा, "तुम उसके विषय में इतना अधिक कैसे जानते हो?" वानर ने कहा, "मेरे विचार से वह ऐसा ही करेगा, और यदि आपको मेरे कथन का विश्वास न हो रहा हो तो मैं स्वयं जाकर देख आता हूं। मैं उसे किसी भी दैत्य को पराजित करने में सहायता भी दे दूंगा और साथ ही यह भी पता लगा लूंगा कि बुद्ध के दर्शन करने की उसकी लालसा कितनी वास्तविक है।" सानचाङ बोला, "यही अच्छा होगा, बहुत अच्छा होगा। किन्तु देखना, तुम कहीं उसको मूर्ख मत बनाने लग जाना।" वानर ने यह बात मान ली और पर्वत पर जाते समय उसने अपने शरीर को हल्का सा झटका देकर स्वयं को एक छोटे से कीड़े में परिवर्तित कर लिया। अब वह नितान्त साफ-सुथरा और लघुकाय कीट दिखाई दे रहा था।

此为试读，需要完整PDF请访问：www.ertongbook.com